❍ 31 / 07 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5∗4=20)

➢➢ ∗हर पल उत्साह का अनुभव किया ?∗

➢➢ ∗निराशावादी को आशावादी बनाया ?∗

➢➢ ∗स्वयं के पुरुषार्थ व सेवा से संतुष्ट रहे ?∗

➢➢ ∗ब्राह्मण परिवार से संतुष्टता का सर्टिफिकेट प्राप्त किया ?∗

──────────────────────────

⊹˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ °

☆ ∗अव्यक्त पालना का रिटर्न∗ ☆

❂ ∗तपस्वी जीवन∗ ❂

⊹˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ °

〰✧ ∗हर बात में, वृत्ति में, दृष्टि में, कर्म में न्यारापन अनुभव हो, यह बोल रहा है लेकिन न्यारा-न्यारा, प्यारा-प्यारा लगता है। आत्मिक प्यारा।∗ नम्बरवन ब्रह्मा की आत्मा के साथ आप सभी को भी फरिश्ता बन परमधाम में चलना है, तो मन की एकाग्रता पर अटेंशन दो, ऑर्डर से मन को चलाओ।

⊹˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ °

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

>> *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

.˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

.˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚
☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆
❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂
.˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं श्रेष्ठ स्वमानधारी आत्मा हूँ"*

〰✧ स्वयं को श्रेष्ठ स्वमानधारी आत्मा अनुभव करते हो? *जितना स्वमान में स्थित होते हो, तो 'स्वमान' देहभान को भुला देता है। आधा कल्प देहभान में रहे और देह-भान के कारण अल्पकाल के मान प्राप्त करने के भिखारी रहे। अभी बाप ने आकर स्वमानधारी बना दिया।* स्वमान में स्थित रहते हो या कभी हद के मान की इच्छा रखते हो? जो स्वमान में रहता उसे हद के मान प्राप्त करने की कभी इच्छा नहीं होती, इच्छा मात्रम् अविद्या हो जाते। एक स्वमान में सर्व हद की इच्छायें समा जाती हैं, मांगने की आवश्यकता नहीं रहती। क्योंकि यह हद की इच्छायें कभी भी पूर्ण नहीं होती हैं। एक हद की इच्छा अनेक इच्छाओ को उत्पन्न करती है, सम्पन्न नहीं करती लेकिन पैदा करती है।

〰✧ *स्वमान सर्व इच्छाओंको सहज ही सम्पन्न कर देता है। तो जब बाप सदा के लिए स्वमान देता है, तो कभी-कभी क्यों लेवें! स्वमानधारी सदा बेफिक्र बादशाह होता है, सर्व प्राप्ति-स्वरूप होता है। उसे अप्राप्ति की अविद्या होती है। तो सदा स्वमानधारी आत्मा हूँ-यह याद रखो।* स्वमानधारी सदा बाप के दिलतख्त-नशीन होता है क्योंकि बेफिक्र बादशाह है! बादशाह का जीवन कितना श्रेष्ठ है! दुनिया वालों के जीवन में कितनी फिक्र रहती हैं-उठना तो भी फिक्र, सोयेंगे तो भी फिक्र। और आप सदा बेफिक्र हो। पाण्डवों को फिक्र रहता है? कल व्यापार ठीक होगा या नहीं, कल देश में शान्ति होगी या अशान्ति........-यह फिक्र रहता है?कल बच्चे अच्छी तरह से सम्भाल सकोगे या नहीं-यह फिक्र

माताओंको रहता है?

〰✧ दुनिया में कुछ भी हो लेकिन अशान्ति के वायुमण्डल में आप तो शान्तस्वरूप आत्मायें ता औरों को भी शान्ति देने वाले। या अशान्ति होगी तो आप भी घबरा जायेंगे? आपके घर के बाहर बहुत हंगामा हो रहा हो, तो आप उस समय क्या करते हो? याद में बैठ जाते हो ना! बाप को याद करके शान्ति लेकर औरों को देना-यह सेवा करो। क्योंकि जो अच्छी चीज अपने पास है और दूसरों को उसकी आवश्यकता है, तो देनी चाहिए ना! *तो अशान्ति के समय पर मास्टर शान्ति-दाता बन औरों को भी शान्ति दो, घबराओ नहीं। क्योंकि जानते हो कि-जो हो रहा है वो भी अच्छा और जो होना है वह और अच्छा!*

✧゚ ゚ ••☆••✧゚ ゚ ••☆••✧゚ ゚ ••☆••✧゚ ゚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧゚ ゚ ••☆••✧゚ ゚ ••☆••✧゚ ゚ ••☆••✧゚ ゚

───────────────────────────

✧゚ ゚ ••☆••✧゚ ゚ ••☆••✧゚ ゚ ••☆••✧゚ ゚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧゚ ゚ ••☆••✧゚ ゚ ••☆••✧゚ ゚ ••☆••✧゚ ゚

〰✧ बापदादा इस साकारी देह और दुनिया में आते हैं, सभी को इस देह और दुनिया से दूर ले जाने के लिए *दूर-देश वासी सभी को दूर-देश निवासी बनाने के लिए आते हैं।* दूर-देश में यह देह नहीं चलेगी। पावन आत्मा अपने देश में बाप के साथ-साथ चलेगी।

〰✧ *तो चलने के लिए तैयार हो गये हो* वा अभी तक कुछ समेटने के

लिए रह गया है? जब एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हो तो विस्तार को समेट परिवर्तन करते हो। तो दूर-देश वा अपने स्वीट होम में जाने के लिए तैयारी करनी पडेगी? *सर्व विस्तार को बिन्दी में समाना पडे।* इतनी समाने की शक्ति, समेटने की शक्ति धारण कर ली है?

〰✧ समय प्रमाण बापदादा डायरेक्शन दे कि *सेकण्ड में अब साथ चलो तो सेकण्ड में, विस्तार को समा सकेंगे?* शरीर की प्रवृति, लौकिक प्रवृति, सेवा की प्रवृति, अपने रहे हुए कमजोरी के संकल्प की और संस्कारों की प्रवृत्ति, *सर्व प्रकार की प्रवृत्तियों से न्यारे और बाप के साथ चलने वाले प्यारे बन सकते हो?* वा कोई प्रवृति अपने तरफ आकर्षित करेगी?

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∫∫ 4 ∫∫ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

────────────────────────

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

〰✧ सदा इस स्मृति में डबल लाईट रहो कि मैं हूँ ही बिन्दु। बिन्दु में कोई बोझ नही। यह स्मृति-स्वरूप सदा आगे बढ़ाता रहेगा। *आँखों में बीच में देखो तो बिन्दु ही है। बिन्दु ही देखता है। बिन्दु न हो तो आँख होते भी देख नहीं सकते। तो सदा इसी स्वरूप को स्मृति में रख उड़ती कला का अनुभव करो।*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧ ◦ ◦ ••☆••✧◦ ◦ ••☆••✧◦ ◦ ••☆••✧◦ ◦

———————————————

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- यथार्थ चार्ट रखना"*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा बाबा के कमरे में बाबा के फोटो को निहारती हुई स्वचिन्तन करती हूँ...* अपने भाग्य को देख रही हूँ... मैं 'कोटों में कोई, कोई में भी कोई आत्मा हूँ... जो भगवान ने मुझे चुनकर अपना बनाया... इतना लाड प्यार देकर... शिक्षाएं देकर मेरा भाग्य बना रहे हैं... स्वर्ग की बादशाही सौगात में लेकर आएं हैं... ऐसे प्यारे ते प्यारे बाबा को प्यार से पुकारती हूँ... तुरंत बाबा सम्मुख हाजिर हो जाते हैं...

❉ *प्यारे बाबा मुझे देख मुस्कुराते हुए कहते हैं:-* "मेरे मीठे फूल बच्चे... ईश्वरीय प्यार में सांसो को डुबो दो... हर लम्हा यादो से रंग दो... ईश्वर पिता को नये नये तरीको से प्यार करो... अपनी यादो का चार्ट भी रखो... जितना अथक बन यादो में गहरे डूबोगे उतना ही गहरा प्यार का प्रतिफल भी पाओगे... *बाप को याद करने की भिन्न भिन्न युक्तियाँ रचो पुरुषार्थ का चार्ट रखो थको नही तूफानों में अडोल रहो"*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा एकटक बाबा को निहारते हुए कहती हूँ:-* "हाँ मेरे मीठे प्यारे बाबा मै आत्मा अब तक झूठे नातो को याद किया करती थी अब विश्व पिता को यादकर जीवन को महान भाग्य में रंग रही हूँ... *हर पल अचल अडोल होकर मीठी मीठी यादो में डुबी हूँ..."*

❊ *मीठे बाबा सच्ची कमाई का रहस्य समझाते हुए कहते हैं:-* “मीठे प्यारे लाडले बच्चे... यह ईश्वर पिता के साथ का समय कितना खुबसूरत है जितना चाहो उतना महान भाग्य बाँहों में भर लो... तो इस महान समय का पूरा फायदा उठाओ... हर सेकण्ड सच्ची कमाई में लगाओ... *अथक बन यादो का चार्ट प्यारे बाबा को रोज थमाओ... और विजयी बन मुस्कराओ..."*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा अपने भाग्य पर नाज करती हुई कहती हूँ:-* “मेरे प्राणप्रिय बाबा... *मै आत्मा कितनी भाग्यशाली हूँ कहाँ कब मैंने ऐसा सोचा था... की भगवान यूँ मिल जायेगा और मेरा सोया सा भाग्य जगायेगा...* मेरे मटमैलेपन को अपने मीठे प्यार में धोकर यूँ उजला बना दमकायेगा...”

❊ *प्यारे बाबा मीठी दृष्टि देते हुए कहते हैं:-* “प्यारे सिकीलधे मीठे बच्चे... इस वरदानी ईश्वर पिता के साथ के समय को हर साँस में समाओ... हर पल यादो में भीग जाओ... मन को नयी युक्तियों से रिझाकर ईश्वरीय यादो में लगाओ और सच्ची कमाई को दामन में सजाओ... *ईश्वर पिता के साथ की ऊँगली पकड़कर हर तूफान को तिनका बना दो...”*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा बाबा के प्यार में मगन होकर कहती हूँ:-* “हाँ मेरे मीठे बाबा... आप भगवान होकर मेरी फ़िक्र में खपे है तो मै आत्मा भी सचेत बन सच्ची कमाई में जुटी हूँ... *आपकी मीठी यादो में गहरा सच्चा सुख पाकर सदा की आनन्दित हो रही हूँ... और विघ्नो में विजयी बन मुस्करा रही हूँ...*

∫∫ 7 ∫∫ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- हर समय उत्साह का अनुभव*"

➳ ➳ अपने सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मण जीवन की प्राप्तियों के बारे में विचार करते

ही मैं नशे और खुशी से भर जाती हूँ और ब्राह्मण जीवन की अनन्त प्राप्तियों की स्मृति में खो जाती हूँ। *जिस भगवान की महिमा में शास्त्र भरे पड़े हैं वो भगवान रोज मेरे सम्मुख आ कर मेरी महिमा करता है। जिस भगवान के दर्शन की दुनिया प्यासी है वो भगवान मेरा बाप बन मेरी पालना कर रहा है, टीचर बन हर रोज मुझे पढ़ाने आता है और सतगुरु बन मुझे श्रेष्ठ कर्म करना सिखलाता है*। अविनाशी ज्ञान रत्नों के ख़जाने से हर रोज मेरी झोलियां भरता हैं। हर कदम पर मेरा साथी बन मेरे साथ चलता है। हर मुश्किल में मेरा सहारा बन मुझे हर मुश्किल से पार ले जाता है।

»→ _ »→ अपने सर्वश्रेस्ठ भाग्य के सितारे को चमकाने वाले भगवान बाप का मैं मन ही मन शुक्रिया अदा करती हूँ और उनकी स्नेह भरी याद में बैठ जाती हूँ। *अपने प्यारे मीठे बाबा की मीठी याद में बैठते ही मैं अशरीरी स्थिति का अनुभव कर रही हूँ। स्वयं को अब मैं एक चमकते हुए सितारे के रूप में देख रही हूँ। एक ऐसा सितारा जिसमे से रंगबिरंगी किरणे निकल रही हैं*। अपने इस अति प्यारे, अति सुंदर ज्योतिर्मय स्वरूप को मन बुद्धि रूपी नेत्रों से मैं निहार रही हूँ और इसमें समाये गुणों और शक्तियों का अनुभव कर रही हूँ। एक मीठी सी शान्तमयी स्थिति में मैं स्थित हो रही हूँ। यह मीठी शांतिमयी स्थिति मुझे देह और देह की दुनिया के हर बन्धन से मुक्त कर रही है।

»→ _ »→ बन्धन मुक्त हो कर मैं आत्मा अब इस देह से बाहर निकल रही हूँ और एक आनन्दमयी रूहानी यात्रा की ओर कदम बढ़ा रही हूँ। *यह रूहानी यात्रा मुझे मेरे शिव पिता परमात्मा के पास ले जा रही है। भृकुटि से निकल कर, मैं चमकती हुई मणि अब ऊपर की ओर बढ़ रही हूँ*। धीरे - धीरे सूर्य, चाँद, तारा मण्डल को पार करती करती हुई, सफेद प्रकाश की दुनिया सूक्ष्म लोक को भी पार करके अब मैं पहुंच गई अपने शिव पिता परमात्मा के पास उनकी निराकारी दुनिया परमधाम, निर्वाणधाम में। *वाणी से परे की यह दुनिया ही मेरी रूहानी यात्रा की मंजिल है। अपनी इस मंजिल पर पहुंच कर मैं गहन सुख और शांति का अनुभव कर रही हूँ*।

»→ _ »→ मेरे सामने मेरे शिव पिता परमात्मा हैं। शक्तियों की अनन्त किरणे बिखेरता उनका अति सुंदर मनोहारी स्वरूप मन को लुभा रहा है। मन बुद्धि

रूपी नेत्रों से मैं एकटक उन्हें निहार रही हूँ। निहारते - निहारते अब मैं उनके समीप पहुंच गई हूँ और उनकी अनन्त शक्तियों की किरणों को अपने ऊपर आते हुए अनुभव कर रही हूँ। *स्वयं को मैं अपने शिव पिता परमात्मा की सर्वशक्तियों रूपी किरणों की ममतामयी गोद मे अनुभव कर रही हूँ। बाबा का असीम प्रेम और वात्सलय उनकी ममतामयी किरणों के रूप में निरन्तर मुझ पर बरस रहा है*। बाबा का यह अथाह प्यार मुझमे असीम बल भर कर मुझे शक्तिशाली बना रहा है।

➳ _ ➳ बाबा के इस निस्वार्थ प्रेम को स्वयं में समा कर अब मैं वापिस लौट रही हूँ। अपने ब्राह्मण स्वरूप में अब मैं स्थित हूँ और बाबा के प्रेम की लगन में मग्न हो कर हर कर्म कर रही हूँ। *बाबा के असीम स्नेह और प्यार की अनुभूति ने मुझे सहजयोगी बना दिया है*। चलते - फिरते हर कर्म करते अब मेरी बुद्धि का योग बाबा के साथ स्वत: ही जुटा रहता है। *सदा मुहब्बत के झूले में झूलते हुए हर प्रकार की मेहनत से अब मैं मुक्त हो गई हूँ*।

➳ _ ➳ अब मुझे याद में रहने की मेहनत नही करनी पड़ती बल्कि "बाबा" शब्द का अजपाजाप अब निरन्तर मेरे अंदर चलता रहता है जो मुझे हर पल मनमनाभव की स्थिति में स्थित रखता है। *हर पल, हर घड़ी बाबा की छत्रछाया को मैं अपने ऊपर अनुभव करती हूँ*। बाबा की छत्रछाया मुझे सदा निश्चित स्थिति का अनुभव कराती है। सहजयोगी बन परमात्म याद और परमात्म छत्रछाया के अंदर रहने से अब मेरा जीवन नई खुशी नए उत्साह से सदा भरपूर रहता है।

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं अपनी सर्व जिम्मेवारियों का बोझ बाप को दे स्वयं हल्का रहने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं निमित्त और निर्माण आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा जीवन का श्रृंगार संतुष्टता को धारण करती हूँ ।*
✺ *मैं संतुष्टमणी हूँ ।*
✺ *मैं सदा संतुष्ट ब्राह्मण आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ *वर्तमान समय सेवा की रिजल्ट में क्वान्टिटी बहुत अच्छी है लेकिन अब उस क्वान्टिटी में क्वालिटीज भरो। क्वान्टिटी की भी स्थापना के कार्य में आवश्यकता है।* लेकिन वृक्ष के पत्तों का विस्तार हो और फल न हो तो क्या पसन्द करेंगे? पत्ते भी हो और फल भी हों या सिर्फ पत्ते हों? पत्ते वृक्ष का श्रृंगार हैं और फल सदाकाल के जीवन का सोर्स हैं।

✺ *"ड्रिल :- सेवा में क्वान्टिटी के साथ साथ क्वालिटी पर भी अटेंशन देना।"*

⋙ _ ⋙ मैं आत्मा परमात्मा को याद करते हुए अपने मन बुद्धि से एक बुलबुले के अंदर अपने आप को इमर्ज करती हूं... और मैं अनुभव करती हूँ कि मैं उस बुलबुले में बैठी हूं... और उड़ती जा रही हूं... *खुले आसमान में उड़ते हुए मैं अपने आपको इस दुनिया में सबसे अद्भुत अनुभव करती हूं... मैं अनुभव करती हूँ... कि उड़ने की शक्ति परमात्मा ने केवल मुझे ही दी है... मैं आत्मा यह सोचते हुए अपने आप को उस बुलबुले की सहायता से और भी ऊंची अवस्था में महसूस करती हूं...* और कुछ समय बाद मैं अपनी मन बुद्धि से पहुंच जाती हूं अपने घर परमधाम... वहाँ पहुंचकर मैं देखती हूं कि वहां का वातावरण इस इस स्थूल वतन से बिल्कुल ही न्यारा है...

⋙ _ ⋙ जैसे जैसे मैं परमधाम में समय व्यतीत करती हूं... मुझे आभास होता है कि उस लाल सुनहरे प्रकाश के बीच मैं बुलबुले के आकार की चमकती हुई मणि के समान प्रतीत हो रही हूं... और मैं अपने सामने परमात्मा को अनुभव करती हूँ... जिनसे अनेक रंग बिरंगी किरणें निकल रही है... और मुझमें समाती जा रही है... *जैसे जैसे वह शक्तिशाली किरणें मुझमें प्रवेश करने लगती है... वैसे वैसे ही मैं फिर से एक बुलबुले के रूप में परिवर्तित होती जा रही हूं... और मुझे ये आभास होता है कि परमात्मा मुझे अपनी शक्तिशाली किरणों से भर रहे हैं...* और इन किरणों से अपने आप को भरपूर कर मैं अब बन जाती हूँ एक शक्तिशाली बुलबुला...

⋙ _ ⋙ और मैं आत्मा अपनी मन बुद्धि से बुलबुले की आकृति में धीरे-धीरे नीचे उतरती जाती हूं... जैसे जैसे मैं नीचे उतरते जाती हूं... मैं प्रकृति के पांचो तत्वों को अपनी पॉजिटिव किरणों से पवित्र बनाती जा रही हूं... और मैं यह फील करती हूं... कि *मुझ आत्मा रूपी बुलबुले से यह पवित्र किरणें निकलकर प्रकृति के पांचो तत्वों को पवित्र बना रही है... और मैं उनको पवित्र बनते हुए अनुभव कर रही हूं...* और जैसे ही मैं आत्मा इस धरा पर आती हूं... तो मैं अपने आप को इस कल्पवृक्ष की जड़ों में स्थित कर लेती हूं... मैं अपनी शक्तिशाली किरणों से इस पूरी सृष्टि को शांति की किरणें देती जा रही हूँ... और जैसे-जैसे मैं अपनी शांति की किरणें सारे कल्पवृक्ष में फैलाती जा रही हूं... वैसे ही मैं अनुभव करती हूँ... कि यह कल्पवृक्ष एकदम भरपूर हो रहा है... कल्पवृक्ष की एक-एक शाखाएं शांति को अनुभव करते हुए हरियाली से भरपूर हो

रही हैं...

➻ _ ➻ और जैसे-जैसे मुझसे किरणें निकलती जा रही है... मैं बुलबुले के आकार से धीरे-धीरे अपने असली स्वरुप में आ रही हूं... मैं उस बुलबुले से अब चमकती हुई मणि रूपी आत्मा का आभास कर रही हूं... और अपने आपसे एकाग्रचित अवस्था में स्थित होकर यह संकल्प कर रही हूँ... कि मैं आत्मा अपने आपको सातों गुणों से भरपूर अनुभव करते हुए और परमात्मा द्वारा दिए हुए हर खजाने को अपने अंदर समाते हुए... इस सृष्टि की सेवाधारी बन कर रहूँगी... *मैं आत्मा अपने आपको विश्व सेवाधारी की स्टेज पर अनुभव करती हूँ... और अपने अंदर सभी खजानों को भी गहराई से अनुभव करती हूँ... तथा मैं अपनी सभी कमी कमजोरियों को बारीकी से चेक करते हुए... इन्हें समाप्त करती जा रही हूं...* जैसे जैसे मैं अपनी कमी कमजोरियों को समाप्त करती जाती हूं... मैं अपनी शांति भरी स्थिति का आनंद लेती जा रही हूँ... और अपनी शक्तियों को पहचानते हुए, जानते हुए मैं अन्य दुखी आत्माओं को परमात्मा का परिचय देकर उन्हें सही मार्ग पर लाती जा रही हूँ...

➻ _ ➻ अब मैं आत्मा परमात्मा द्वारा दिए हुए... ज्ञान रत्नों और शक्तियों से श्रृंगारित होती जा रही हूं... इन अविनाशी रत्नों से सज संवर कर अन्य आत्माओं को भी ज्ञान रत्नों से सजाती जा रही हूं... मैं यह देख रही हूं... कि सभी आत्माएं श्रृंगारित होकर बहुत ही आनंदित हो रही है... और बार-बार अपने आपको सजा सँवरा देखकर हर्षित हो रही है... उनके हर्षित मुख के कारण मुझ आत्मा की चमक और भी बढ़ती जा रही है... *जैसे-जैसे मैं अपने आप को शक्तिशाली स्थिति में अनुभव करती हूं... वैसे वैसे ही मैं अपने आपके और भी करीब होती जा रही हूँ... और अपनी छुपी हुई शक्तियों को पहचानती जा रही हूं...*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔